विद्या भवन बालिका लिद्यापीठ,लखीसराय

वर्ग नवम विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

पाठ: द्वितीय: पाठनाम स्वर्णकाक:

ता: 09-05-2021 (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

- गर्वितया बालिकया प्रोक्तम् - स्वर्णमयेन। सोपानेनाहमागच्छामि परं स्वर्णकाकस्तकृते ताम्रमयं सोपानमेव प्रायच्छत्।स्वर्णकाकस्ता

  भोजनमपि ताम्रभाजने हयकारयत् ।

- **शब्दार्थ**

  गर्वितया –घमण्डी के द्वारा , प्रोक्तम् –कहा गया,कहा

  तत्कृते - उसके लिए , प्रायच्छत् –दिया

  ताम्रभाजने - ताँबे पात्र (बर्तन) में

  अकारयत् -कराया

- **अर्थ**

  मैं सोने की बनी हुई सीढी से आती हूं(आऊंगी) परंतु सोने के कौए उसेताँबे बनी हुई सीढी ही दी । सोने के कौए उसे भोजन भी ताँबे के बर्तन में ही कराया ।